

यहां तो तुम जानते हो शिव व बावेठा ही है उनके याद में बैठे हो। और याद के साथ ज्ञान में भी बैठे हो। क्योंकि बाप ही याद में भी हो, ऐसे नहीं जदमुनो तब ज्ञान में हो। तुम स्वदर्शनचक्रधारी भी हो, रचना के अदि मध्य अन्त को भी जानते हो। ज्ञान है स्व आत्मा में। स्वदर्शनचक्रधारी हो ना। तुम बच्चों को सारी सृष्टि की नालेज, ज्ञान है। तुम्हारी बहुत कमाई हो रही है। कितना भी देर बैठे रहो कमाई ही कमाई है। तुम आते ही हो सच्ची कमाई लिए। सच्ची कमाई और कहां होती नहीं। जो साथ चले। वस इसीधून में ही रहना है। यहां तो कोई धंधा आद नहीं है। बायुमंडल भी ऐसा है। तुम बायुमंडल को शुध करते हो सारी दुनिया के बायुमंडल को। सर्विस बहुत कर रहे हो। जो अपनी सेवा करते हैं वही भारत की सेवा कर रहे हैं। यह पुरानी तु दुनिया रहेगी नहीं। न तुम होगे। सृष्टि ही नई बन जाती है। तुम बच्चों की वृंदि में सारा ज्ञान है। और कोई को नहीं है। इन सभी को किस ने लाया। आप समान तुम ने बनाया है ना। इतने देर सेन्टर्स हैं। इन सभी को तुम बच्चों ने बनाया। बच्चों ने शिक्षापाई। पक्षा निश्चय भी है। कहेंगे तो जर ना कल्प पहले जो सर्विस की उ वह करते हैं। यह भी समझते हो दिन प्रति दिन आप समान बनाते रहते हो। इस ज्ञान को सुन कर बहुत ग होते हैं। जबसुनते हैं तो रोमांच खड़े हो जाते हैं। यह ज्ञान तो कव कोई से सुना नहीं। तुम ब्राह्मणों से ही सुनते हैं। भक्ति मार्ग में मैहनत कुछ भी नहीं है। सन्यासियों की कोई आपस में सतसंग भी नहीं होता। गृहस्थी आकर बैठते हैं उनको फलोअर्स सन्यासी तो नहीं कहेंगे। तुम बास्तव में सभी सन्यासी हो। सारी छो छी दुनियाको छोड़ना है। रात-दिन का खुल पर्क तो हे ना। यह वेहद का सन्यास वेहद का बाप ही बतलाते हैं। सभी को बम्बरटार खुशी है। प्रेम एक जैसी नहीं। ज्ञान प्रेरण योग भी एक जैसानहीं। और सभी भनुष्य देहधारियों पास जाते हैं। यहां तुम उनके पास आये हो जिसको अपनी देह नहीं है। जितना पुरुषार्थ करने रहेंगे याद का, सतोप्रधान बनते जावेंगे। जितना याद का पुरुषार्थ करते रहेंगे उतनी ही खुशी बढ़ती रहेगी। बाप के पास आते तो समझना चाहिए हमको बाप जो वर्सादे रहे हैं उनको भावी पहलते हैं। बाबा इनकोदेखते हैं तो चटक पड़ते हैं। फिर बाबा देखने की ताकत कम ट्रेलेखें^xब्रोकर देता हूँ। यह भी तोदेखते हैंना। तो खुद की कशिश कम कर देता हूँ। नहीं तो खड़े हो जावेंगे। छूड़ाउं केसे। इसलिए कशिश को खुद ही कमती कम कर देता हूँ। मैं बैठा रहूँगा। बहुत सामने आकर बैठते हैं। देखते 2 बैठेंगे ही रहेंगे जब तक मैं ऐसे (सिर नीचे करना या इस्त उधर करना) न करूँ। दोनों खड़े हो जाते हैं। ताकत कम कर दुंगा तो कशिश कम हो जावेंगी। इनकी भीप्रेक्टीग हो गई है तब ही कहता हूँ मैं भी जैसे बाबा बन गया हूँ। प्रेक्टीस तो चलती रहती है ना। आत्मा आत्मा को भी बहुत प्रभाव प्यार से देखा जाता है। जिस में प्यार होता है उनकोदेखते रहेंगे। यह भी आत्माओं का और परमहंसा का है शुद्ध प्यार। वह है भी निराकार^{र्थ} तुम्हारी जितनी कट उतरती जावेंगी उतनी ही कशिश होती जावेंगी।

प्रोग्राम जो बनाया है याद का, अच्छा है। तुम्हारे तो कमाई है। भक्तों के धात ही और है। भक्त धर्मभाव हीतर है। ज्ञान का किसको भी पता नहीं है। वेसे कोई ज्ञान में अच्छे बहुत है। भक्तों की भी माला बनती है ना। ज्ञान में भी माला बनते हैं। ज्ञान तो बच्चों को है ना। भ्रह्मिभक्त भी कम बहुत होते हैं। जिनको याद करते हैं उनके अस्युपेशनको ही नहीं जानते। गोता में बलोयर है भगवानुवाल, गामिं याद करने से विकर्म विनाश होंगे। परन्तु कृष्ण तो है नहीं। तो उनको याद करनेसे क्या होंगा। हमेशा दो बाप की बात सुनाओ। बाप तो स्वर्ग की स्थापना करते हैं। माला का दाना बनना स्कौलरीशप है। जितना याद करेंगे हातों प्रधान बनते जावेंगे। अपनी डिग्गी तुम देख सकते हो खुशी बढ़ती जाती है। बाकी प्रोग्राम अच्छा है। बाबातो सवैरे जागते ही हैं। हे बहुत इज़्जी। आसन आद को कुछ दरकार नहीं। आराम से बैठयगद करो। सो कर भी याद कर सकते हो। बाप खुद कहते हैं मुझे याद करने से तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। पाप कट जावेंगे। यह बहुत ही

सहज याद है। वेहद का ख्लेंगे बाप जोकि टीचर बनते हैं उनको तो बहुत याद करना चाहिए ना। याद करते हैं उसमें माया के विष पड़ते हैं। माया कोई को छोड़ेगी नहीं। देखना है इम ने बाप की याद में हर्षित हो जाना खाया। आशुक को माशुक भिला तोखुशी होंगी ना। तुम्हारा जमा होता जावेगा। बाबाको तो खुशी होती है। वह बाबा सर्वलाईट देते हैं। यह भी जैसे वह बन जाते हैं। जैसे कि एक हो जाते हैं। इसमें मुझने की कोई बात नहीं। तुम जितना याद करते जाते हो जमा होता जाता है।

मैंजिल बहुत बड़ी है। तुम क्या से क्या बनते हो। 84 जन्म भी लेनी पड़ती है। फर्स्ट ब्लास अवस्था को जाए। पाना है वच्चों को। तुम बहुत ही समझदार बनते हो। पहले तो बेसमध थे। बाप कहते हैं साधु-सन्त श्राद्धभीष्म-मुनि आद सभी वेसमध वेअकल हैं। छाता वेवकुफ है। तुम कितने समझदार बनते हो। इमआष्टमीस्तना फर्स्टक्लास है। हम बाबा को याद करते हैं पुरानी छल उत्तर नई चढ़ जावेगी। कर्मतीत अवस्था को पावेगे फिर यह छोड़ देंगे। बहुत कुछ तुमको समझना है। सप्लाई साकात्कर भी हो सकता है। नज़दीक आने से घर आद याद आते हैं नश अपने शहर की। भ्र बाबा की नालैन बड़ी थीठों है। मगवान बेठ पढ़ते हैं। ख्य में पढ़ते हैं। वह है भक्ति। फिर भी होंगी। वच्चे आते हैं बहुत डिशा होकर जावेगे। यहां तुम नई बातें सुनते हो। 'भक्ति-मार्ग' में भी मनुष्यों को बड़ा भजा आता है। शास्त्र आद पृष्ठने में। हे कुछ भी नहीं। हर बात में पुस्तार्थ तो कर्म ही होता है। 'भक्ति' मार्ग में पुस्तार्थ करते छाते गिते ही जाते हैं। यहां तुम चढ़ते जाते हो। चढ़ती कला सर्व का भला है ना। तुम कोई नईबात नहीं सुनते हो। अनेक द्वार तुम ने तुनी है वही सुनते रहते हो। कोई भ्र सुनते हैं समझ में आ जाता है। सुनते रहेंगे गद-यद होते रहेंगे।

तुम हो अन-नोनवारियर्स। और दहुत वेरि वेल-नोन। देवियों की पूजां क्यों होती है तुप सरे विश्व को हैविन बनाते हो। तो करने वाले और करनेदोनों ली हो महिमा होती है। यहां तुम बहुत कथाई कर सकते हो। बायुगंडल शुध रहता है। घर में थोड़े ही ऐसा बायुमंडल बन सकता है। इसलिए सन्यासी भी दूर चले जाते हैं। तुम वच्चायां थोड़े ही जावेगी। परस्तु आजकल मातारं मी सन्यासियों में कनवर्ट हो जाती है। वच्चों को मालूम है आदी सनातन धर्म वाले जरूर जावेगे, सेपलिंग का रिवाज़ औरी पहा ने

तुम अपने आप को तिलक लगाते हो। जो अच्छी रीत पृष्ठते हैं वह अपने को स्कालरोशप लायक बनाते हैं। अच्छा थोड़े 2 वच्चों को स्थानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाई और नमस्ते।

रात्रिक्लास 10-4-68 ५४ :- तुम हो स्थानी स्वदर्शनचक्रशारी ब्राह्मण कुलभूषण। और सर्वोत्तम श्रेष्ठ रुत। जैसे अग्रबाल कुल आद होते हैं ना। ब्राह्मण कुल देवताओं से भी ऊंच है। क्योंकि वच्चों को बाप पढ़ते हैं। इश्वर के बने हो उन से वसा लेने लिए। इंश्वर वसा देते हैं विश्व की बायमही। और यह तो वच्चों को समझ गया है धर्म जो स्थापन होती है। पहले कूल हीते हैं फिर डिनायंस्टी। क्राइस्ट पृथ, इब्राहीम आद जो भी वही 2 हेउनको प्रिसेप्टर(गुरु) नहीं कहा जाता है। तो यह सन्यासी उदासी तोड़ीटेंमठ-क्षेत्र डास्टार-टारियां आद हैं। उनको भी गुरु-नहीं कहेंगे। वह है भक्ति मार्ग वाले गुप्त सदगति देने वाले। ऐसे भी नहं कि वह दुर्गति देते हैं। उनको मालूम नहीं पड़ता है। यह है इश्वरीय सम्प्रदाय के लदगुरु, वह है गवण सम्प्रदाय के गुप्त तुम सच्चाँ सस्ता बताते हो। वह है धूठा रास्ता। बाप रूर्धों हैं तुम्हों सदगति देकर गया फिर दुर्गति कि सने दी? 5विकार। रावण। बाप कहते हैं मैं ने शिवालय कनाया फिर वैश्वालय किसने बनाया? श्रीमत पर तुम भी सदगति वाले ठहरे। तो सच्चा सदगुर सक ती निहयः है। बाबा कहने से वर्से की खुशबूरं आती है। शिव को हमेशा बाबा ही कहा जाता है, बाप कहते हैं अर्द्ध सुनते हो कानों से। यह नालैन है ना। नालैन में रम आवनेट चौहिए। वह यह(ल०ना०) दिखाई जाती है। कोईझही स०० करोड़ों। यह कोई कराता नहीं। हाया मैं नूध हूँ। आटोभेटकली ही जाता है। बाप स०० करों नहीं। जैसे भक्ति मार्ग का भी सम्झाया नवधा भक्ति करते

है तो भावना का फल मिलता है। ईश्वरफल नहीं देता। ईश्वर सदगीत देते हैं। वह सदगीत मिलती है पढ़ाइसे न किसां से। एमआवजेट तो है। बहुत बच्चों की दिल होती है सां करने। भगवान कहते हैं मैं सां नहींकरता। मैं रस्ता बताता हूं परित्य से पावन होने का। सां से फ़ायदा तो है नहीं। मैं वह रस्ता बताता हूं जिससे कल्याण हो फ़ायदा हो। तुम ने कब आत्मा का सां किया जो दाय का करने चाहते हो। आत्मा खुद को ही नहीं जानती। शिव बाबा सां वह तो शास्त्रों में है अद्विष्ट ज्योति है। विन्दी का सां कैरेगे कैसे। समझ में ही नहीं आवेगा। मैं तो एक बार आता हूं आकर रस्ता बताता हूं। तुम ऐसे पवित्र बन बिश्व के मातिक बन सकते हो। बाकी सां से कुछ नहीं होता। समझो सां करते रहेंगे फ़ायदा कुछ भी नहीं। हो सकता है उसमें भाया की प्रवेष्टा हो जाये। इसलिए कब भी सां का ख्याल नहीं करना है। यह तो स्कूल है न। है ही सत्य नारायण की कथा। वह लक्षी है नूठी कथासं। यह तो नालेज है। नालेज को कथानहीं। नालेज तो समझ दी जाती है। टीचर बैठ पड़ते हैं। चक्र का राज सुनाते हैं। और आत्माजी अपवित्र बनी है इसके लिए कहते हैं मुझे याद करो। तुम्हारी आत्मा पवित्र हो जावेगी। आत्मा भी विन्दी वहुत सूक्ष्म है। इन आँखों से देख न सकेंगे। सां से विकर्म विनाश होंगे। योग से विकर्म होना है। सां की कब भी दिल खो नहीं। वह भी भक्तिमार्ग की इमाम में नृथ है। मनोकामना पूरी जीतो है। बाको फ़ायदा कुछ भी नहीं है। पढ़ाई से फ़ायदा होती है। पढ़ाई ही टाईम लेती है सां तो सेकण्ड का काम है। मूल बात है आत्मा को सतोप्रधान कैसे बनावें। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो जंक निकल जावेगी। जन्म-जन्मान्तर के पाप कट जावेगे। तुम थर जाकर फिर पहले२ स्वर्ग में आ जावेगे। सतोप्रधान भी बनना है। दैवी गुण भी धारण करना है। रोज देखो कोई कोदुःख तो नहीं दिया। मैं बाबा कोयाद करता हूं। कोई अव्वज्ञा तो नहीं हुई। सभी तरफसे बुधि योग हटाये भारेकं याद करो। तुम्हारे विकर्म विनाश हो जावेगे। इसमें सां आद की प्रश्न ही नहीं उठता। पढ़ाई और याद है मुख्य। ऐसी पढ़ाई में अपसेन्ट न खेलना चाहिए। पढ़ाई कहां भी पहुंचाई जाती है। विलायत में भी मुख्ती जाती है ना। चक्र का राज और बाप की याद। दस। नालेज मिलती हैंगी। शुद्धय२ पायन्दस मिलती हैंगी। मुख्ती रोज पड़नी चाहिए। जो अपसेन्ट न हो। यह है पवित्र पढ़ाई। पवित्र भी होना है पढ़ाई भी पढ़नी है। देवताओं के आगे आश ले जाते हैं। यहां आश ले आने की दरकार ही नहीं। उनको पता ही नहीं भगवान से क्या स्पिलेंगा। भगवान आपे ही हमीं कुछ देते हैं। बच्चों को सब बताते हैं। अन्दर में जो बात होंगी आपे ही रेसपाण्ड मिल जावेगी। बाबा से कहेंगे धन्धे मैं यह बात है बाप कहते हैं मैं इन ब्र बातों को नहीं जानताहूं। हमरे थे ने ही वह पंधा छोड़ दिया। यह पढ़ाईअच्छी लगी जिससे बादशाही मिलती है। बाको और कोई सतासंग हूं नहीं। वह तो लतसंग है। सीधी उत्सनी ही है। ऊपर को इं जा न सके। दिन ए प्रति दिन उत्तरी कला होती जाती है। नई दुनिया पुरानी होती जाती है। बाकी सां आद सभी भक्ति मार्ग के हैं। जिस स्थ में देखा हुआ होंगा वही साड़ होंगा। तो बाप कहते हैं तुमको इतना अकीचार धन दिया और क्या किया? तुमको मालूम है? कितना सालवेन्ट बनाया। घूवर का खा जाना था। हिरों के महल थे। इमाम अनुयायार उतोर ही आये हैं। भारत सालवेन्ट था ना। अभी यह गरीब बन गये हैं। वह शाहुकार हो गये। फिर रिट्टन वहां सेलेते हैं। फिर हिसाब किताब चुकुत हो जावेगा। यह लेल है समझने का। और मेहनत भी है। इदा मात्रम् अविद्या। बापआपे ही आकर स्वर्ग का मातिक बनाते हैं। एमआवजेट सागरे हैं। बाप आकर पढ़ते हैं नम्बरवार पस्त्यार्थ अनुसार। जितना निश्चयबुधि होकर पुस्त्यार्थ करेंगे। प्रश्नार्थ यंशय बुधि विनश्यन्ति, निश्चय बुधि व्र विजयन्ति। पूरा निश्चय हो तो ध्यानी का पास चढ़े। यह बेहद का इमाम है। तुम ऐसे स्कर्टर्स हो। सत्युग में बहुत धोड़े स्कर्टर्स होते हैं। एक भारत छाड़ ही था। ऐसे आदी सनातन देवी देवता धर्म फिर स्थापन होरहा है। यह इमाम की अच्छी गत समझना है। विश्वात बुधि चाहिए। बताते ही हो आकर पावन बनने वा रोता बताओ। बाप कहते हैं मैं जूद जाता हूं तो सभी को मुक्ति जीवनमुक्ति देता हूं। क्राइस्ट आया। वह किसको ज्ञान देंगे जो क्ल गुरु कहें। यह है

पुस्तोतम संगम युग। अच्छा बच्चों को फिर सबैरे उठना है। यह अच्छा है। कट उत्तरी जावेंगी। इसमें स्कॉल्ट बड़ी अच्छी चाहिए। सन्यासी भी गोखल ऐसे धर्म से निकल जाते हैं। तुमको स्नास के करना नहीं है। जैसे पवित्र आये थे वैसे ही पवित्र बन जाना है। अन्त मते सो गति हो जाएगी। पिछाड़ी में हिसाब किंताद सरा निष्ठला है। स्कालरशाप बहुतधौड़े लेते हैं। बच्चों को याद में स्वदर्शनचक्रधारी बनना है। बाप सिंफ सिंहालाते हैं ऐसे भजन बनेंगे। दुनिया भी इस चक्र की नहीं जानती है। तुम बापको और रचना के आदि मध्य अन्त को जानते हो। अच्छा बच्चों को रहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। रहानी बच्चों को रहानी बाप का नमस्ते।

→ रात्रिविलास 11-4-68 : बाप बच्चों से पूछते हैं यह है स्प्रिंगल ईश्वरीय युनिवर्सिटी। इसमें बच्चों को क्या मिलता है? बताओ दो अक्षर मैं। (मुक्ति और जीलनप्रमुक्ति) यहराईट है। सुख और शान्ति। यहाँ है दुःख। शान्ति सुख और दुःख यह चक्र तो सभा लिया है। शान्ति के लिए रीडियां मारते रहते हैं। हीरो-हीरोईन का पार्थ तुमने ही बजाते हो। तुम्हारा नाम सभी से बाला है जिसको कोई नहीं जानते। बाप आकर ब्रह्मा कुमार, मूलगा दुष्प्राप्तियों को पूर्ति है। जिससे शान्ति और सुख मिलता है। विश्व में शान्ति और गुण अभी ही मिलता है। बाप ही आदि स्वर्ग की स्थापनाकरते हैं। तुम स्वर्ग हेविन के मालिक बन रहे हो। और सहज कितना है। बाप का बननेमें बाबनने से यह पद मिलता है। अभिग्रहण क्या पूछेंगे। बाप को जानने से वर्षा को जान लेते हैं। बाकों जानने का कुछ रहता नहीं। इमाम को भी समझ जाते हैं। स्कृट दिलकुल स्क्युरेट चलता है। त्योहार सभी संगम युग जैसे माहिमा है। बेहद के बाप जो स्कैटरटी करते हैं उनकी त्योहार इनाई जाती है। शक्ति अनराईटियर बदलते हैं। बाप रामराईटस बनते हैं। बच्चों की दुष्प्राप्ति में है बाबा हमको सुल्टान्स्क्रॉप्टर्स बनाते हैं। रावणसाम्य में उल्टा बन जाते हैं। पुजारी बन पहनते हैं। तुम जो कुछ करते हो रॉइट करते हो। सभी को बतलाना चाहिए शिव बाबा सम्मुख कहते हैं। शिवजयन्ति तो है ना। शिव बाबा आते हैं। अबतार लेते हैं। स्वर्ग स्थापन करेंगे। नक्क का दिनांक भी जरूर करेंगे। तुम जो स्थापना करते हो फिर पालना भी जरूर करेंगे। तुम हो अन्नोन ब्रह्मिल्लख दार्यर्थ। कट देखे देत नौन। बाप कहते हों मेरे को कहते ही हो ज्ञान का सागर। बाकों है भवित। दिल में आता है बादा भी उत्तर स्वर्ग का वर्षा ले रहे हैं। बाबाबा भी समझते हैं वच्चेस्वर्ग का वर्षा ले रहे हैं। वह है हृदय की बात यह है बेहद की बात। तुम हृद और देहद्वारा दोनों को ही जानते हो। दूसरे सिंपहृद दो जानते हैं। बेहद को जानते ही नहीं। अनुभव भीयही सुनावेंगे हम बाल के लिए है बाप मेरे देहद का घर्षण लेने। हर 5000 वर्ष बाद फिर अनुभव तुम अपना अपना वर्षा लेंगे। फिर लीढ़ी उत्तरेंगे। फिर लीढ़ी आना और जाना। सोढ़ी उत्तरा और चूना।

बच्चे कहाँ मुँहते हों तो पूछ सकते हैं। परन्तु मुँहने को कोई बात ही नहीं। हर बात में पुस्तार्य जरूर होता है। इस सभय की पुस्तार्य ही हमारीप्रस्तव्य अदिनाद्वारा बन जाती है। यहाँ है ही सुल्तानाँ दुःखधाम। शान्तिधाम सुखधाम और दुःखधाम। यह तुम चक्र लगाते रहते हो। बच्चों को खेल यह अनुभव बताना चाहिए बाप की मुरली सम्मुख सुनने हे वाया। फ़र्यदा होता है। यहाँ गोला धांडा आद तो हे नहाँ। घर में जाने से फिर वह ट्रेनिंग स्टॉडी डो जातो हैं। सत रेज की शदठी यहाँ हैं। दोई फ़ीटिंगिट की बात ही नहीं। इसलिए बच्चे आते हैं ट्रेनिंगोने। अच्छा बच्चों को गुडनाईट। और नमस्ते।

सभी सर्विस रघुव बच्चों को न सिंफ बच्चों को बल्कि स्टुडन्टस की रडानी बाप दादा का याद प्यार बाद समाचार कि बच्चे खुब समझते हैं कि पत्तवन देवी गुणों सहित बेहद के बाप के देहद का वर्षा पा रहे हैं श्रीमत पर। अभी स्टुडन्ट को पढ़ना है सो तो जहाँ भी बच्चे हाँ मुरली मिलती है रुद्रा आद धारण करना है। अभी कोई कहे देवी गुण नहीं धारण कर सकते हैं, शराब कवाब खाने बिंगड़ रह नहीं सकते हैं तो जस समझना है कि बहुत कम पदप्रजा जन्म जन्मान्तर लिए है। बड़ा खाटा पहनना है। व्यापारों जो इन्हाँ बड़ा खाटा सह सा परा अनारों समझा जाता है। छुद भी समझकरों हैं दूसरी कमाई 21 जन्म को बन रही है। बाकी दूसरी कमाई बिनेश हुये कि लंगुर हुये रिंगूं गच्छा बच्चों से विदाइ।